गुरु पद्मसंभव

स्रोत: पी.आई.बी.

नालंदा, बिहार में **गुरु पद्मसंभव के जीवन** और **जीवंत विरासत** पर दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसका आयोजन **अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परसिंघ** (International Buddhist Confederation- **IBC**) एवं नव नालंदा महाविहार द्वारा किया गया था।

- यह कार्यक्रम गुरु पद्मसंभव द्वारा बौद्ध शिक्षाओं को स्थानीय संस्कृतियों और परंपराओं के अनुकूल बनाने पर केंद्रित था।
- गुरु पद्मसंभव, जिन्हें **गुरु रिनपोछे** के नाम से भी जाना जाता है, 8वीं शताब्दी के एक ऋषि थे, जिनकी शिक्षाओं ने हिमालय क्षेत्र में **बुद्ध धम्म के प्रसार को महत्त्वपूर्ण आयाम** दिया। उन्हें **दूसरा बुद्ध** माना जाता है।
- तिब्बती बौद्ध धर्म के संस्थापकों में से एक गुरु पद्मसंभव 749 ई. में तिब्बत में प्रकट हुए थे। अन्य दो संस्थापक **आचार्य शांत रक्षित** और **राजा थिसोंग देओत्सेन** थे।
  - तिब्बती बौद्ध धर्म भारत के महायान **बौद्ध धर्म का वज्रयान (तांत्रिक)** रूप है।
- **न्यिंगमा संप्रदाय** की शिक्षाएँ पद्मसंभव पर आधारित हैं। शिक्षाओं को **नौ यानों में वर्गीकृत** किया गया है, जिसमें **ज़ोग्चेन (महा पूर्णता) सबसे महत्त्वपूर्ण** है।
  - ज़ोग्चेन ध्यान के माध्यम से परम चेतना पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि **विज्रयान** परंपरा में **निर्वाण प्राप्त करने के लिये अनुष्ठान, प्रतीक और तांत्रिक अभ्यास** शामिल हैं।
- **IBC नई दिल्ली में स्थित एक बौद्ध संस्था** है जो विश्व भर के बौद्धों के लिये एक साझा मंच के रूप में कार्य करती है। वर्तमान में 39 देशों के 320 से अधिक संगठन इसके सदस्य हैं।

//

और पढ़ें: भारत में बौद्ध धरम

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/guru-padmasambhava